STATE LEVEL WORKSHOP

ON

ACTIVITY BASED LEARNING:
PROACTIVE, AUTHENTIC AND INTERACTIVE LEARNING

FOR

Strengthening of BTI / DIET/ CTE / SCERT Faculty Members with the Collaboration with IFIG

(26-27 February, 2018)

I have a "Can Do" attitude. I choose my actions, attitudes and moods. I don't blame others. I do the right thing without being asked, even when nobody is looking.

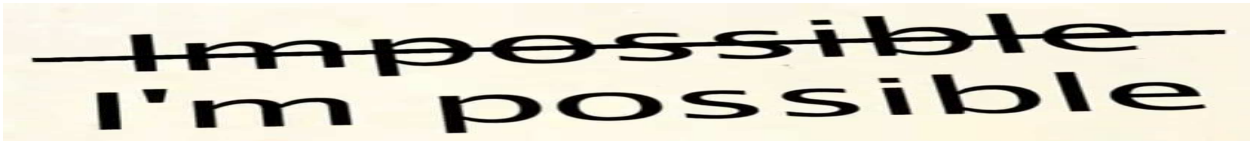

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING,RAIPUR, C.G

1. Be Proactive

2. Begin with the end in mind
3. Put first thing, first
4. Think win-win
5. Seek first to be understand
6. Synergize
7. Sharpen the saw

Stephen Covey

Proactive, Authentic and Interactive learning किसी भी शिक्षक को प्रभावशाली शिक्षक में परिवर्तित कर सकती है। अथवा शिक्षक किस प्रकार प्रभावशाली बने या बनने की दिशा में अग्रसर होने के लिए Proactive, Authentic and Interactive learning एक संतुलित Approach है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के शिक्षक–शिक्षा प्रकोष्ठ एवं IFIG के संयुक्त तत्वाधान में माह फरवरी में BTI/DIET/CTE/IASE को शिक्षक प्रशिक्षकों के strengthen के लिए विभिन्न चरणों में कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम चरण 15–16 एवं द्वितीय चरण 22–23 फरवरी को सम्पन्न हुआ जिसमें Planning, Budgeting, NAS, Learning Outcomes आदि पर विस्तृत विमर्श दिया गया। तृतीय एवं अंतिम चरण में Proactive learning पर केन्द्रित कर स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में आ रहे महत्वपूर्ण बदलाव को समझकर एवं बदलते परिवेश में Proactive, Authentic and Interactive learning के माध्यम से विद्यार्थियों/शिक्षकों की दक्षता में संवर्धन करना। यह प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए।

वर्तमान में शिक्षक की भूमिका सिर्फ शिक्षा तक सीमित नहीं है उसे एक कुशल प्रबंधक की भूमिका निभानी होती है। अतः सक्रिय ना रहकर सीखना–सिखाने की प्रक्रिया की एक महत्वपूर्ण विधा है। जिसे शिक्षक अपने शिक्षकीय पेशे में अपनाकर लक्ष्य केन्द्रित अध्ययन–अध्यापन कर सकता है।

कार्यशाला के उद्देश्य –

1. सक्रिय विद्यालय सक्रिय कक्षा।
2. सक्रिय विद्यालय एवं सक्रिय शिक्षार्थी।
3. सक्रिय विद्यालय एवं समुदाय
4. सक्रिय विद्यालय में कक्षा प्रबंधन
5. कक्षाओं को रूचिपूर्ण बनाना

किसी भी कक्षा में परिणाम 5E पर निर्भर करता है। Engage /Explore/ Explain/ Elaborate/Evaluate 5E को प्राप्त करने के लिए Proactive methodology पर जाना होगा।

कार्यशाला का प्रारंभ प्रकोष्ठ समन्वयक श्री सतीश पाण्डेय ने उद्‌बोधन में किया गया जिसमें उन्होनें नेतृत्व एवं प्रबंधन के माध्यम से सक्रिय सीखना–सिखाने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। इसी तरह College of teacher education एवं Institute advance school education के प्राचार्य के द्वारा डी.एल.एड./बी.एड. के प्रशिक्षार्थी स्कूल में शाला अनुभव के दौरान Proactive teaching learning कर सकते है। साथ ही महत्वपूर्ण तथ्य पर भी प्रकाश डाला कि स्कूल CAC, BRC के बीच डाइट के साथ तालमेल होना चाहिए जिससे सभी स्तरों के समन्वय से शिक्षा व्यवस्था संचालित हो।

Interactive Learning –

सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है आस–पास का वातावरण, प्रकृति, चीजों व लोगों के साथ कार्य, व्यवहार और भाषा के माध्यम से अंतःक्रिया करना।

- खोजना या समूह में कार्य करना।
- अपने दोस्तों, सहपाठियों व बड़ों के साथ काम करना, पढ़ना, सीखना, अभिव्यक्त करना, पूछना, सुनना, प्रयोग करना, निष्कर्ष निकालना, अपने निष्कर्ष की जाँच करना ये कुछ महत्वपूर्ण क्रियाएँ है। जिनसे सीखना संभव होता है।

हमारी स्कूली शिक्षा में सीखने का एक बड़ा हिस्सा अभी भी व्यक्ति आधारित है। जिसमें शिक्षक की प्रमुख भूमिका होती है, लेकिन हमें यह समझना होगा कि आस–पास के परिवेश और समुदाय से संपर्क सीखने की अनेक संभावनाएं खोल सकता है। जब स्कूल में, कक्षा में विविधता होती है तब यह और भी प्रासंगिक हो जाता है। हमारी कक्षाएँ में विविधताएँ है।

समूह में काम सीखना, जिम्मेदारी लेना जो काम दिया जाता है, उसे समूह में पूरा करना इस परिस्थिति में अकसर बच्चे क्षमता से आगे जाकर कार्य कर क्षमतावान बनते है। इससे विद्यार्थियों की सक्रियता बढ़ती है।

कक्षा शिक्षण में लचीलापन लाने के लिए NPE – 1986, NCF- 2005 के अनुसार शिक्षकों में वे क्षमताएँ व आत्मविश्वास लाना जरूरी है जिससे वे स्वतंत्र रूप से बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के अनुसार अपने अध्यापन की योजना बना सके।

इससे शिक्षक विशिष्ट जरूरत वाले बच्चों पर भी ध्यान दे सकेंगे। समावेशी कक्षा के शिक्षक की पाठ योजना को इस ओर इंगित करना चाहिए कि शिक्षक बच्चों की विभिन्न जरूरतों के अनुसार कक्षा में जारी गतिविधि को कैसे बदलता है।

हमें अपने शिक्षकों को प्रशिक्षित करना होगा कि वे बच्चों में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विविधता की समझ को विकसित करें जो खुद उनके साथ स्कूल तक आती है।

हमारे अनेक स्कूलों में पहली पीढ़ी के विद्यार्थियों की बड़ी संख्या है। पहली पीढ़ी के विद्यार्थी, लेखन व पठन को विकसित करने, पढ़ने में अभिरूचि बनाने, भाषा से परिचय प्राप्त करने व स्कूल की संस्कृति से परिचित होने के लिए पूर्णतः स्कूल पर निर्भर होंगे। यह निर्भरता तब और बढ़ जाती है, जब मातृभाषा स्कूल में प्रयुक्त भाषा से अलग हो। ऐसी स्थितियों में 'होम–वर्क' लगभग नहीं होना चाहिए। बहुत से ऐसे बच्चे घर की परिस्थिति के कारण असुरक्षित होते हैं जिससे हो सकता है कि वे समय पर स्कूल न आएँ, अनियमित रूप से आएँ, कक्षा में अधिक ध्यान न दें पाएँ। ऐसे बच्चों को इन विवशताओं से मुक्त करने के लिए इन्हें सहायता जुटाना और ऐसी पाठ्यचर्या बनाना आवश्यक है जो इन परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील हो। ऐसी परिस्थिति में Interactive Learning हो सकती है।

Authentic Learning - यह नवीन शब्दावली है जिसमें जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में सीखना होता है। Authentic learning में वास्तविक जीवन की समस्याओं और उनके समाधान को प्रमुखता दी जाती है।

इसके प्रमुख तत्व है –

1. बच्चों के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य/गतिविधि (Authentic Choplogic Task)
2. कार्य को करने के लिए बच्चों के Homogenous Group
3. विद्यार्थी खोज करते है (Student Exploration)
4. समूह में सीखना (Collaborative Learning)
5. Higher order skill (सोचना विमर्श करना, विश्लेषण, निष्कर्ष निकालना आदि सीखना)
6. बहुविषयक (Multidisciplinary)
7. प्रदर्शन आधारित आकलन (Performance Based Assessment)
8. शिक्षक सुविधादाता (Teacher as facilitator)

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में Priactive होना यानि कि स्वयं पहल करना, Interactive Learning समूह में सीखना एवं सीखने में सार्थकता Authentic Learning को ध्यान में रखकर कक्षा शिक्षण योजना बनानी होगी जिससे सक्रिय कक्षा को प्राथमिकता मिलें एवं शिक्षक सुविधादाता की भूमिका का निर्वाह करे।

जापान सिंगापुर आदि की शिक्षा व्यवस्था वैश्विक परिदृश्य में श्रेष्ठ मानी जाती है। जापान की शिक्षा व्यवस्था की चर्चा अध्ययन छत्तीसगढ़ शासन द्वारा किया गया। जापान की शिक्षा व्यवस्था की चर्चा सचिव, छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं संचालक एस.सी.ई.आर.टी.,छ.ग. द्वारा की गई । इसके प्रमुख बिन्दु संक्षेप में निम्नानुसार हैं –

Quality Education for All, सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, Compulsory Education, National Curriculum Standards ensure equal opportunities for quality education for all, Text books are written and edited by private publishes

National Curriculum Standards (Japan)

Solid academic ability

Pupils are proficient in basic and fundamental knowledge and has Substantial ability to find their subjects to be challenged, learn byThemselves, think for themselves, make independent judgments, Carry out actions, and find a better solution.

Competency

Pupils are self disciplined cooperative with others and have a heart that is impressionable and considerate of others

Pupils have a healthy body for healthy living

Richness in humanity

Healthy body

* संचालक, महोदय़ ने चर्चा को विकसित करते हुए निर्देशित किया कि प्रभावशाली शिक्षण के लिए निम्न प्रयास करने होंगे –

  - पढ़ाते समय Stress को कम करना, Syllabus कम करना। 50 प्रतिशत व्याख्यान कम करें।
  - कमीशीबाई का Concept में adopt किया जा सकता है। इसके अंतर्गत कागज से theater बनाकर विषय आधारित चर्चा की जा सकती है या पाठ पढ़ाया जा सकता है।

  ➢ यह बच्चों के सामने गणित की समस्या को रखकर उन्हें सोचने का अवसर देता है।
  ➢ कमीशीबाई ऑफलाइन वीडियो है जो कक्षा 5 तक के बच्चों के लिए उचित है।
  ➢ कक्षा 5 में पर्यावरण अध्ययन के लिए NCERT Hand book ली जा सकती है।

दिनांक 27.02.2018

सत्र का प्रारंभ कार्यक्रम समन्वयक द्वारा किया गया जिसमें Proactive, Authentic and Interactive Learning को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण कैसे किया जाए इस पर चर्चा की गई। कार्यशाला से निम्नलिखित बिन्दु सामने आये –

1. प्रशिक्षण आवश्यकता आधारित हो,
2. विषय आधारित हो। जो भौगोलिक और सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ा हो। स्कूल में व्यवहारिक रूप से पहुंचने योग्य हो। सीखने के संप्राप्ति, शोध एवं नवाचारों के परिणामों पर आधातिर हो। प्रशिक्षण डिजाईन स्पष्ट हो। मॉनिटरिंग सशक्त हो।

कार्यशाला में प्रशिक्षण हेतु प्रतिभागियों के चिन्हांकन के आधार इस प्रकार रहें

1. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम गुणवत्ता अभियान की रिपोर्ट।
2. NAS के परिणाम।
3. संकुल शैक्षिक समन्वयकों और डाइट अकादमिक सदस्यों से प्राप्त फीडबैक (सूची)।
4. X तथा XII के परिणाम।

कार्यशाला में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में राज्य में प्रचलित तरीकों पर प्रकाश डाला गया– ये शिक्षण विधियाँ कक्षा एवं शिक्षकों को सक्रिय कर शिक्षण को Inter active authentic बनाती हैः– Mind Mapping द्वारा, Co-operative learning द्वारा, ICT का उपयोग करके, Paper learning ड्राइंग कर, Role Play द्वारा, मॉडल बनाकर, ग्रुप डिस्कशन, टेस्ट पेपर द्वारा, प्रोजेक्ट वर्क बनाकर, Teaching Learning Material द्वारा, लर्निंग कैम्पस द्वारा, Science exhibition द्वारा, SMC के सहयोग एवं अनुभव, Collaborative learning, गायन, रोल प्ले, Case study , कमीशीबाई तरीके से, लोक कलाओं से।

बच्चे की आयु, परिवेश व विषय के अनुसार गतिविधियों का चुनाव हो। जिससे Proactive, Interactive Authentic Learning को प्राथमिकता मिले।

इस विमर्श के बाद तय हुआ कि अंग्रेजी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान विषय पर विभिन्न डाइट्स द्वारा कार्य किए जाएं। जिससे सीखना सार्थक हो और लर्निंक आउटकम्स की प्राप्ति हो। निम्नलिखित विषयों पर इन संस्थाओं एवं सदस्यों द्वारा कार्य किया जावेगा –

English - DIET Durg
Science - DIET Durg
Maths - DIET Korba
Social Science - IASE, Bilaspur

- **शिक्षा में गुणवत्ता हेतु सुझाव इस प्रकार रहें –**
  - बेस्ट प्रेक्टिसेस उच्चतर माध्यमिक स्तर प्रदर्शनी का फीड बैक लेकर।
  - विश्वविद्यालय से संपर्क बढ़ाकर।
  - बच्चों के लिए Guest Lecturer आयोजित कर।
  - व्यावसायिक मार्गदर्शन हेतु कार्यक्रम आयोजित कर।
  - Exposure Visits बढाए।
  - Proactive, Interactive, Authentic learning हेतु Schools से संपर्क बढ़ाए।

- **मैडम मीतू गुप्ता पर्यावरणविद् ने पर्यावरण अध्ययन विषय पर समूह से चर्चा की –** विषय को परिवेश से जोड़कर वास्तविक परिस्थितियों में पढ़ाया जाए, जैसे–तितलियाँ सबसे अच्छा उदाहरण है। जहाँ सभी Sense organs का उपयोग किया जा सकता है। तितली का रोल प्ले करके उससे प्रश्न पूछकर प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, परागण आदि पर बातचीत की जा सकती है। उदाहरण पौधे के विभिन्न aspects पर चर्चा जैसे –
  – सामाजिक पक्ष – भोजन, पानी
  – आर्थिक – वनों का संरक्षण, भोजन
  – सांस्कृतिक – पूजा पाठ, नदियाँ, वृक्ष।

सोमशेखर जी के द्वारा मल्टीमीडिया Text book for science कक्षा 6–8 पर चर्चा की गई। इसके अंतर्गत –

- Content SCERT का होगा।
- Android Mobile पर देखा जा सकता है।

- **डॉ. महेन्द्र मिश्रा** – राज्य प्रमुख, आई.एफ.आई.जी. के अनुसार –
  - डाइट का आशय है–शिक्षक तैयार करना। जिलों में स्कूलों की गुणात्मक उन्नति करना।
  - Tribal जिलों में Social Economic Coordination अलग है। अतः नियमित उपस्थिति एक चुनौती है।
  - किताब Monograde है, School Multigrade हैं। अतः Pre Service Education सशक्त हो।
  - शिक्षा संवेगात्मक कार्य है यदि संवेदना से नहीं किया गया तो, यह छलनात्मक श्रम सिद्ध होगा। अतः शिक्षक संवेदना के साथ कार्य करे।

कार्यशाला में AWP कैसा हो, इस पर चर्चा की गई–इस विषय पर निम्नलिखित बिन्दु सामने आएं–

* AWP के अंतर्गत एक Information System तैयार किया जाए।
* Foundation Course Develop किया जाए, जिससे शिक्षक अपनी कक्षा में प्रभावशाली शिक्षण कर सकें। यह कक्षा 1–8 तक की हो।
* लर्निंग आउटकम्स एवं Teacher Motivation पर प्रशिक्षण हो।
* मास्टर ट्रेनर कौन होगा–Primay School , Upper Primay School, Higher Secondary School के Teacher, DIET Faculty, CACs.
* हर पांच स्कूल पर एक मास्टर ट्रेनर हो, मास्टर ट्रेनर की संख्या बढ़ाई जाए। जिससे एक जिले में 300 RPs तैयार किए जाए।
* 5–5 दिनों के 02 चरणों में प्रशिक्षण हो, Phase wise master Trainer बुलाए जाएं।

कोई नवीन कार्य डाइट में हुआ तो बताएं इस मुद्दे पर निम्न बातें सामने आई –

डाइट दुर्ग– स्कूल में खेलों को बढ़ाया देने के लिए मॉडयूल बनाया गया है। विकासखण्डवार प्रशिक्षण दिया गया।

डाइट रायपुर– मल्टीमीडिया के माध्यम से कक्षा 6 के विज्ञान विषय के शिक्षण का प्रशिक्षण 300 शिक्षकों को दिया गया।

डाइट पेण्ड्रा– पुस्तकालय हमेशा खुला रहता है।

डाइट खैरागढ़– लोक कलाओं के माध्यम से शिक्षण किया जाता है।

कार्यशाला में निर्देश दिया गया है कि CTE कक्षा 9 -10 और IASE कक्षा 11-12 की बुनियादी संदर्शिका तैयार करें।

- संचालक महोदय की मंशा रही कि सभी संस्थाएँ अपने कार्यों को अपनी संस्था में डिस्प्ले करें। Deep Learning होनी चाहिए। वॉल पेपर बनाएं। Faculty अपने कक्ष में अपने कार्यों को डिस्प्ले करें। अपने को अपडेट करें। अपने कार्यो को शेयर करे। डाइट कलेक्टर से मिलकर अपने जिले की शिक्षा का संवर्धन करें।

- कार्यक्रम समन्वयक के अनुसार–AWP 18-19 के मॉड्यूल DIET, IASE CTE को बनाएंगे।

- **प्रतिभागी–** BTI, DIET, IASE, CTE, SCERT के Faculty Members.

प्रमुख बिन्दुः–

- Proactive, Authentic, Interactive learning को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाए।
- प्रशिक्षण आवश्यकता आधारित हो।
- एक बार किसी विषयवस्तु पर प्रशिक्षण हो जाए, तो उसे दोहराया न जाएँ।
- प्रशिक्षण डिजाइन स्पष्ट हो।

प्रशिक्षण हेतु प्रतिभागियों का चिन्हांकन हेतु डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम गुणवत्ता अभियान का रिपोर्ट, NAS एवं स्कूल परीक्षा के परिणाम डाइट एवं CACs से प्राप्त फीडबैक एवं LoS की प्राप्ति।

AWP का माडॅयूल DIET, IASE, CTE द्वारा बनाया जाए।

प्रमुख बिन्दुः–

- Proactive, Authentic, Interactive learning को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाए।
- प्रशिक्षण आवश्यकता आधारित हो।
- एक बार किसी विषयवस्तु पर प्रशिक्षण हो जाए, तो उसे दोहराया न जाएँ।
- प्रशिक्षण डिजाइन स्पष्ट हो।

प्रशिक्षण हेतु प्रतिभागियों का चिन्हांकन हेतु डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम गुणवत्ता अभियान का रिपोर्ट, NAS एवं स्कूल परीक्षा के परिणाम डाइट एवं CACs से प्राप्त फीडबैक एवं LoS की प्राप्ति।

AWP का माडॅयूल DIET, IASE, CTE द्वारा बनाया जाए।

Smita
1613